International Journal of Applied Research 2016; 2(6): 200-201

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(6): 200-201
www.allresearchjournal.com
Received: 20-04-2016
Accepted: 21-05-2016

शैलेन्द्र कुमार
शोध–छात्र, हिन्दी विभाग
नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय
इलाहाबाद

Correspondence
शैलेन्द्र कुमार
शोध–छात्र, हिन्दी विभाग
नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय
इलाहाबाद

मुक्तिबोध की राजनैतिक चेतना

शैलेन्द्र कुमार

मुक्तिबोध के साहित्य में राजनैतिक स्वर का विशेष महत्त्व है। राजनीतिक क्षेत्र में फैला अवसरवाद, भ्रष्टाचार, पदलालसा, खोखली नारेबाजी के अनेक सन्दर्भ उनके साहित्य में मिलते हैं। भारतीय नेताओं की उपदेशप्रियता व्यावहारिक अकर्मण्यता का द्योतक है। जैसे–जैसे वे जन–कल्याण के कार्य से विमुख होते गये, भाषणों में उपदेशों और खोखले आदर्शों की भरमार होती गयी है। नेताओं की उपदेशात्मक प्रवृत्ति पर इन पंक्तियों में व्यंग्य किया गया है–''लगता था कि वह भाषण है। उसमें उपदेश दिये जा रहे थे। राष्ट्र के निर्माण के लिए नवयुवकों को तैयार रहना चाहिए, 'समाज के पुनर्निमाण के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सरकारी प्रयत्नों से सहयोग कीजिए, आदि–आदि। मैं सोचने लगा कि ये शब्द अपने आप में अर्थवान होते हुए भी कितने निरर्थक हैं। उन्हें पढ़कर या सुनकर हमारे नवयुवक को ऐसा नहीं मालूम होता जैसे उनकी जिन्दगी की बात हो रही हो।'' [1]

मुक्तिबोध ने नेताओं की सत्ता लालसा की ओर 'वीरकर' डायरी में संकेत किया है।

भारतीय राजनीति में जाति अब तक एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती रही है। चुनावों में जातिवाद का व्यापक उपयोग किया जाता है। चुनाव क्षेत्र में प्रमुखतः जिस जाति की संख्या अधिक होती है, राजनीतिक पार्टियाँ उस जाति के व्यक्ति को अपना उम्मीदवार चुनती है। नौकरी तथा अन्य क्षेत्रों में जातिवाद और भाई– भतीजावाद जोर पकड़ रहा है। जातिवाद के इस स्वरूप को मुक्तिबोध ने आग्नेश्का सौनी को लिखे पत्र में प्रकट किया है। [2]

'उपसंहार' कहानी अवसरवाद, सत्ता प्रेम तथा अन्य राजनैतिक हथकण्डों को प्रकाश में लाती है। जनतन्त्र के नाम पर चल रही तानाशाही की झलक एक पात्र का कथन ''हमारे शासक भी जनतन्त्र का उपयोग करते हैं? जन–नेता बने फिरते हैं। गुण्डा–एक्ट कहाँ–कहाँ किस–किस पर लगाया गया है, जानते हैं आप? विरोधी पार्टियों के नेताओं और कार्यकर्ताओं पर ही केवल नहीं, पुराने कांग्रेसी कार्यकर्ताओं पर, जो सत्ताधारी दल के खिलाफ बोलते और कार्य करते थे, उन पर भी लगाया गया है।'' [3]

मुक्तिबोध 15 अगस्त, 1947 को मिली स्वाधीनता के वास्तविक इतिहास से परिचित लगते हैं। उन तथ्यों के जानकार होने के कारण ही वे कह सकते हैं कि– ''जिस भ्रष्टाचार, अवसरवादिता और अनाचार से आज हमारा समाज व्यथित है, उसका सूत्रपात बुजुर्गों ने किया। स्वाधीनता प्राप्ति के उपरान्त भारत में, दिल्ली से लेकर प्रान्तीय राजधानियों तक, भ्रष्टाचार और अवसरवादिता के जो भी दृश्य दिखाई दिये, उनमें बुजुर्गों का बहुत बड़ा हाथ है। [4]

स्वाधीनता के बाद सरकार ने देश के विकास के लिए विदेशी पूँजी को आमन्त्रित किया। ब्रिटिश पूँजी पहले लगी ही थी, अमरीकी पूँजी का आगमन अधिक मात्रा में हुआ। इन देशों ने विभिन्न उद्योगों में अपनी पूँजी निवेश कर लाभ कमाना प्रारम्भ किया। इस प्रकार भारत में पूँजीवादी अर्थव्यवस्था की जड़ें मजबूत होने लगी। 'जमाने का चेहरा' कविता में सरकार की कार्यनीतियों का चित्रण है।

मुक्तिबोध की अधिकांश कविताओं में राजनैतिक स्वर की प्रबलता है। निम्नलिखित पंक्तियां इस सन्दर्भ में दृष्टव्य है–

''साम्राज्यवादियों के
पैसों की संस्कृति
भारतीय आकृति में बँधकर
दिल्ली को
वाशिंगटन व लन्दन का उपनगर
बनाने की तुली है!!
भारतीय धनतन्त्री
जनतन्त्री बुद्धिजीवी
स्वेच्छा से उसी का ही कुली है।'' [5]

किसी विशेष घटना के सन्दर्भ के मुक्तिबोध की कविता शासकीय तानाशाही और उसके अमानवीय कार्यकलापों को रूपक, बिम्ब और प्रतीक के माध्यम से व्यक्त करती है। इस असंगतिपूर्ण परिवेश में कहीं आत्मज सत्य को छुपाया जाता है, तो कहीं आत्मा की हत्या होती है। कहीं गगन में कर्फ्यू लगा है, घोसलों में कारतूस घुसे हैं, हवा में सिहरन व्याप्त है, तो कहीं जुलूस में कर्नल, ब्रिगेडियर नेता, आलोचक, कवि के साथ गुण्डा डोमाजी भी दिखाई देता है।

'चाँद का मुँह टेढ़ा है' कविता की ये पंक्तियाँ सत्ता के घिनौने और अमानवीय पक्ष की ओर संकेत करती है–

''गगन में कर्फ्यू,
धरती पर जहरीली छिः थूः,
पीपल के सुनसान घोंसले में पैठे हैं
कारतूस–छरै
जिससे कि हवेली में
हवाओं के पल्लू भी सिहरे
गंजे सिर चाँद की सँवलाई किरणों के जासूस
साम–सूम नगर में धीरे–धीरे धूम–धाम
नगर के कोनों के तिकोनों में छुपे हुए
करते हैं महसूस
गलियों की हाय–हाय!!'' [6]

'अंधेर में' कविता इस आतंकदायी सत्ता के अमानवीय पक्ष को तीखे रूप से सामने लाती है। जिसमें विषमतापूर्ण वातावरण से विक्षुब्ध कलाकार की गोली से हत्या की जाती है और काव्यनायक की स्क्रीनिंग की जाती है। [7]

संक्षेप में राजनैतिक क्षेत्र में मुक्तिबोध विशेष रूचि रखते थे। राजनीतिक विषमता ने उनकी चेतना को आक्रांत किया था, जिससे उनके संवेदन विश्व का विस्तार तो हुआ, लेकिन रचना–विधान अधिक जटिल और दुरूह होता गया।

संदर्भ

1. मुक्तिबोध रचनावली, भाग 4, पृ. 27
2. वही, भाग–6, 377
3. वही, भाग–3, पृ. 109
4. वही, भाग 4, पृ. 173
5. वही, भाग 2, पृ. 84–85
6. वही, भाग–2, पृ. 298
7. वही, भाग–2, पृ. 377
8. कविता के नये प्रतिमान, नामवर सिंह